नईदुनिया

इंदौर, गुरुवार 19 मई 2016

कॉलर आईडी स्पूफिंग- फर्जी वीओआईपी कॉल्स से ऐसे बचें

वरुण कपूर
आईपीएस

वॉइस कॉल एक अन्य तरह की स्पूफिंग है, जिसका उपयोग साइबर अपराधों की दुनिया में होता है। कॉलर आईडी स्पूफिंग का मतलब है, कॉल किसी खास नंबर से किया जाना, लेकिन कॉल रिसीव करने वाले को रिसीवर पर पूरी तरह से अलग नंबर दिखाई देना।

सबसे पहले अपराधी उस शख्स की पहचान करते हैं, जिसे निशाना बनाया जाना है। एक दिन उसे कॉल किया जाता है। उदाहरण के लिए जो नंबर कॉलर आईडी पर डिस्प्ले होता है वह है +44 2345 34534. यह नंबर (+44 कोड) यूके का है। फोन उठाते ही कॉलर अजीबो-गरीब तरीके से अंग्रेजी बोलना शुरू कर देता है। यह सुनकर टारगेट को लगने लगता है कि वाकई यूके से कॉल आया है। कॉलर टारगेट को बताता है कि उसे फलां कंपनी की दो मिलियन पाउंड की लॉटरी खुली है। यह राशि हासिल करने के लिए उसे बस अपने खाते का विवरण देना है, ताकि रकम खाते में ट्रांसफर की जा सके। बेचारा पीड़ित सोचता है कि कॉलर आईडी पर नंबर यूके का दिखाई दे रहा है, सामने वाला भी अच्छी खासी अंग्रेजी बोल रहा है। इस तरह वह जाल में फंस जाता है और कॉल करने वाले को अपने खाते का विवरण दे देता है। इसके साथ ही वह बड़ी भूल कर बैठता है। अब अपराधी के पास पीड़ित की अहम व्यक्तिगत जानकारी है, जिसका इस्तेमाल वह आर्थिक धोखाधड़ी के लिए कर सकता है। इस तरह कॉलर आईडी स्पूफिंग से अपराध को अंजाम दे दिया गया।

कॉलर आईडी स्पूफिंग में वीओआईपी कॉल्स की तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। यह एक वॉइस ओवर इंटरनेट प्रोटोकॉल है। ये टेलिफोन कॉल्स नहीं, बल्कि इंटरनेट कॉल्स होते हैं। आसान शब्दों में कॉलर आईडी स्पूफिंग एक प्रोसेस है, जिसके तहत कॉलर आईडी में दिखाई दे रहे नंबर को किसी और नंबर से बदल दिया जाता है। कई बार तो अपराधी इंटरनेट पर उपलब्ध सेवाओं (जैसे- कवर्टकॉलिंग.कॉम) के सदस्य बन जाते हैं और उन्हें पर्सनल आईडेंटिटी नंबर (पीआईएन) भी जारी किया जाता है। इसमें अपराधी कंपनी का दिया नंबर डायल करता है, पिन दर्ज करता है, जहां कॉल करना है वहां का नंबर और जो नंबर वह कॉलर आईडी पर दिखाना चाहता है, वह दर्ज करता है। इस तरह उसे अपराध अंजाम देने में जरा भी परेशानी नहीं होती। ऐसी कई वेबसाइट्स तो ट्रायल अवधि के लिए निःशुल्क सेवा प्रदान करती हैं। कुछ सेवाओं में तो कॉल करने वाले को अपनी आवाज बदलने की सुविधा भी दी गई है, ताकि उसकी आवाज को पहचाना या पकड़ा न जा सके।

कॉलर आईडी स्पूफिंग में पीड़ित को लालच में फंसा कर या उसे किसी खतरनाक स्थिति का आभास करवाकर धोखाधड़ी की जाती है। खतरनाक स्थिति में डालकर पीड़ित पर दबाव डाला जाता है कि वह तुरंत कहे अनुसार काम करे। धोखाधड़ी के इस धंधे में महिलाओं को भी शामिल किया जाता है। यहां पीड़ित को आभास करया जाता है मानो साउथ ईस्ट एशिया या किसी पश्चिमी देश में बैठी महिला से बात कर रहा है। इस काम के लिए महिलाओं को हजारों या लाखों रुपए तक दिए जाते हैं। सच्चाई यह होती है कि वे देश के ही किसी कोने से बोल रही होती हैं। उनकी कॉलिंग का खर्च उन्हें चुकाई जाने की रकम से बहुत कम होता है।

पीड़ित के सीडीआर में ऐसे कॉल्स इंटरनेट कॉल के रूप में दिखाई देते हैं और परंपरागत रूप से इनका पता लगाया जाना संभव नहीं है। एक तरीका यह है कि अपराधियों को कॉलर आईडी स्पूफिंग प्रदान करने वाली कंपनियों से संपर्क साधा जाए और उन्हीं से अपराधियों का आईपी एड्रेस हासिल किया जा सकता है। आईपी एड्रेस मिलने के बाद सिम कार्ड, मॉडम या डेटा कार्ड-डोंगल से कॉल ट्रेस किया जा सकता है। फिर इस खास सिम कार्ड, मॉडम या डेटा कार्ड-डोंगल को यूजर से कनेक्ट किया जाता है। अपराध की तह तक पहुंचने के लिए ऐसी भारी मशक्कत वाली प्रक्रिया से गुजरना होता है। कई बार तो पुलिस को पता ही नहीं होता कि यह सब कैसे करना है? इसके चलते पहले तो पुलिस बचती है। कई बार आईपी एड्रेस विदेश का होता है या फर्जी होता है। इस तरह जांच एक डेड एंड पर जाकर ठहर जाती है। पीड़ित को न, तो उसका पैसा वापस मिलता है और ना ही आरोपियों को सजा हो पाती है।

(लेखक अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक पद पर इंदौर में पदस्थ हैं और विचार उनके व्यक्तिगत हैं)
ईमेल: varunkapoor170@gmail.com

इन बातों का रखें खास ध्यान

- कॉलर आईडी स्पूफिंग में देश में बैठे अपराधी विदेश से कॉल करने का षड्यंत्र रचते हैं
- करोड़ों की लॉटरी वाले फर्जी कॉल्स इसी तरह किए जाते हैं
- परंपरागत तौर-तरीकों से इन अपराधियों को पकड़ना मुश्किल है
- अनजान नंबरों से आए कॉल रिसीव न करें, सर्च इंजन पर जांचें

ये हैं बचने के उपाय

इन अपराधों से बचने का पहला तरीका तो यह मानना है कि ऐसा कॉलर आईडी स्पूफिंग होता है और इनसे लोगों को ठगा जाता है। इस तरह विदेशी नंबर से आने वाले कॉल्स से बचना चाहिए। फोन पर अज्ञात नंबरों से आने वाले कॉल्स या अनजान लोगों से बात करने से बचना चाहिए। यह फर्जी या स्पूफ कॉल हो सकता है। यदि कोई शंका है तो सामने वाले को कुछ देर होल्ड करने को कहें और डिस्प्ले पर दिखाए गए नंबर पर दूसरे फोन से कॉल करें। यदि उक्त नंबर बिजी है या कही गई कंपनी या एजेंसी में फोन लगता है तो यह स्पूफ कॉल नहीं है। एक आखिरी जांच के रूप में नंबर को सर्च इंजन में दर्ज करके देखना चाहिए। इससे आप पता लगा पाएंगे कि नंबर कही गई कंपनी का है या नहीं? यह भी पता लग सकता है कि कहीं किसी धोखेबाजी में तो उस कंपनी का नाम नही आया है? आप जान पाएंगे कि दूसरे लोग उस नंबर के बारे में क्या कह रहे हैं?